www.thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पं /जे.ए

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष : 70 अंक : 28
सृष्टि संवत् 1960853114
13 अक्तूबर 2013
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–70, अंक : 28, 10/13 अक्तूबर 2013 तदनुसार 28 आश्विन सम्वत् 2070 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आओ ! वेदोद्यान चलें

ले० श्री भद्रसेन 182 शालीमार नगर होशियारपुर

(गतांक से आगे)

3. ऋग्वेद परिचय

जब हम वेदोद्यान में प्रवेश करते हैं, तो वह चार भागों में बंटा हुआ दिखाई देता है। धार्मिक कर्मकाण्ड में कलश पूजन के समय भी चारों वेदों की शाखाओं का ही आह्वान किया जाता है। वैदिक साहित्य में जहां कहीं वेदों की शाखाओं का वर्णन आता है, वह भी चार का ही होता है। अत: चार ही वेद हैं। इन चारों में से ऋग्वेद का प्रथम एवं प्रतिष्ठित स्थान है। पाश्चात्य विद्वान् भी संसार के पुस्तकालय की सबसे प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद को ही मानते हैं। ऋग्वेद का पद-पाठ (मन्त्र रूपी वाक्यों में आए हुए पदों को अलग-अलग बताने वाली रचना) प्रस्तुत करने वाले महर्षि शाकल्य हैं। इस प्रक्रिया को अर्थ की दिशा में प्रथम पग कहा जा सकता है। इस महान कार्य के सम्पादन के कारण अनेक आचार्यों ने महर्षि शाकल्य का आदर के साथ स्मरण किया है। ऋग्वेद का क्रम पाठकार बाभ्रव्य स्वीकार किया जाता है।

वैदिक वाङ्मय में हमें दो प्रकार के ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। एक वे हैं, जिनमें वेदों के आन्तरिक भावों को खोलने का स्तुत्य प्रयास किया गया है। दूसरी श्रेणी में अनुक्रमणी तथा घन-जटा-माला आदि विविध पाठ सदृश साहित्य आता है। जिनमें वेदों के बाह्य स्वरूप का परिचय दिया गया है। ऋग्वेद से सम्बन्ध रखने वाली शौनक की अनुक्रमणी के अनुसार ऋग्वेद में दश मण्डल, 585 अनुवाक, 1028 सूक्त हैं। जिनमें से 12 वालखिल्य के हैं। ऋग्वेद के मन्त्रों में चौदह प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया गया है। यहां मन्त्रों की कुल संख्या 10580 और उनके पदों की संख्या 153826 है, तो अक्षर 432000 बताये जाते हैं।

इस प्रकार का परिचय संस्कृत के अनेक ग्रन्थों में मिलता है, जिनमें परस्पर कुछ मतभेद भी होता है। विशेष रूप से मन्त्रों की संख्या के सम्बन्ध में अनेक वर्णन मिलते हैं, जिनका मुख्य कारण शाखाभेद से मन्त्र गणना तथा वालखिल्य मन्त्रों को मिलाकर या अलग रखकर गिनने में अन्तर आता है। छन्दों की दृष्टि से भी मन्त्र संख्या में अन्तर मिलता है, तो कुछ कई मन्त्रों को द्विपदा रूप से गिनते हैं तो कुछ चतुष्पदा के रूप में।

इस प्रकार मन्त्र उतने ही होने पर भी छन्द (द्विपदा, चतुष्पदा) के ढंग से गणना करने से मन्त्रसंख्या में अन्तर आ जाता है। ऋग्वेद की मन्त्रसंख्या के सम्बन्ध में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी और श्री युधिष्ठिर मीमांसक ने लघु पुस्तिकायें भी लिखी हैं।

ऋक्-ऋग् शब्द ऋच् धातु से बनता है। अर्थात् इन ऋचाओं द्वारा दिव्य शक्ति एवं विविध वस्तुओं की स्तुति (वर्णन) की गई है। तभी तो कहा है- ऋग्भि: स्तुवन्ति। यहां अग्नि, इन्द्र, वरुण, सोम, विष्णु, पर्जन्य, मरुत आदि नामों से विविध प्रकार की स्तुति की गई है। ऋग्वेद के बहुत सारे मन्त्रों में इन अग्नि आदि के गुणों का वर्णन है। स्तुति-वर्णन के कारण से ही ऋग्वेद के मन्त्रों को ऋचा भी कहते हैं। अग्नि, इन्द्र, वरुण आदि को उस मन्त्र या सूक्त का देवता कहा जाता है। देवता शब्द का तात्पर्य मन्त्र का प्रतिपाद्य या जिनकी वहां प्रधानता से स्तुति हुई है। कुछ इसको इष्टदेव के रूप में भी ग्रहण करते हैं।

अग्नि, इन्द्र आदि देवता शब्द कहीं तो स्पष्ट रूप से ईश्वर की ओर संकेत करते हैं, तो कहीं प्राकृतिक पदार्थ, या मानसिक भाव एवं स्थिति के बोधक झलकते हैं। ये शरीर धारी देव के रूप में हैं या नहीं ? इस सम्बन्ध में निरुक्तकार ने विस्तृत विचार किया है। हां, ये अपने विविध वर्णनों से प्राकृतिक पदार्थों और देवाधिदेव परमेश्वर के भी वाचक प्रतीत होते हैं। क्योंकि भिन्न-भिन्न नामों से एक देवाधिदेव का भी चित्रण प्राप्त होता है। तभी तो इन्द्रं मित्रं वरुणं........। एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति-ऋग् 1,164,46 मन्त्र चरितार्थ होता है।

निरुक्तकार ने कहा है-देवता अपने विशेष सामर्थ्य, गुण, शक्ति, महिमा या ऐश्वर्य के कारण भिन्न-भिन्न नामों से स्मरण किया जाता है। मन्त्रों का वर्णन कहीं आध्यात्मिक, तो कहीं आधिदैविक (=प्राकृतिक) और कहीं आधिभौतिक होता है। कई बार एक ही मन्त्र अनेक विषयों के अर्थों को स्पष्ट रूप से चरितार्थ करता है। जैसे कि-चत्वारि श्रृंगा-ऋ० 4,58,3 मन्त्र का यज्ञ, वेद, व्याकरण के रूप में व्याख्यान किया जाता है, हां ऐसे मन्त्र थोड़े ही हैं। सारे मन्त्र स्पष्ट रूप से तो विविध अर्थों वाले प्रतीत नहीं होते, पुनरपि कुछ तो स्पष्ट ही अनेकार्थक के रूप में सामने आते हैं। आध्यात्म, अधियज्ञ, अधिभूत और अधिदेव रूप में मन्त्रों के वर्ण्य-विषय तो स्पष्ट ही हैं।

ऋग्वेद के अध्ययन से अनेक प्राणियों के नाम तथा उनका वर्णन जहां मिलता है, वहां अनेक प्रकार के अन्नों (भोज्यों फल, पुष्प, मूल, दुग्ध तज्जन्य पदार्थ) औषधियों, धातुओं के नामों तथा प्रयोगों का उल्लेख भी मिलता है। इस प्रकार गौ, अश्व जैसे ग्राम्य और सिंह, वृक प्रभृति वन्य पशुओं तथा विविध प्रकार के वस्त्रों के साथ लकड़ी (बढ़ई कार्य), भवन, पशु-पालन, कृषि, व्यापार आदि उद्योग-धन्धों के रूप में जीवन के आर्थिक और शैक्षणिक पक्षों पर भी प्रकाश प्राप्त होता है। समाज में पुरुष और नारी की स्थिति, उनके कर्त्तव्य और सामाजिक वर्ण व्यवस्था का भी वर्णन मिलता है। इस प्रकार मानव जीवन का कोई पहलू वेद के वर्णन से अछूता नहीं बचा। यहां तक कि युद्धोपयोगी परिमार्जित अस्त्र-शस्त्रों की चर्चा तथा स्थल-जल-नभ सम्बन्धी यातायात के साधनों का भी ऋग्वेद में वर्णन है, हां, वेद का यह वर्णन प्राय: प्रार्थना-शैली में और यज्ञ सम्बद्ध अधिक प्राप्त होता है।

(क्रमश:)

विद्वान लेखक महानुभावों की सेवा में

प्रतिवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आर्य मर्यादा साप्ताहिक का दीपावली विशेषांक पूरी सज-धज के साथ निकाला जा रहा है। इसलिए लेखक महानुभावों से विनम्र प्रार्थना है कि वह दीपावली विशेषांक के लिए अपने लेख शीघ्र अति शीघ्र भेजने की कृपा करें ताकि उनको आर्य मर्यादा के दीपावली विशेषांक में उचित स्थान दिया जा सके। आशा है लेखक महानुभाव अपने लेख शीघ्र अति शीघ्र आर्य मर्यादा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करेंगे।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा साप्ताहिक

महर्षि का कलकत्ता शुभआगमन

-ले० खुशहाल चन्द्र आर्य 180 महात्मा गांधी रोड़ कोलकत्ता

महाराज पौष सं० 1929 तदनुसार सन् 1872 के लगभग कलकत्ते पहुंचे। उनको यहां बुलाने का उद्योग श्रीयुत् चन्द्रशेखर सेन बैरिस्टर ने किया था। स्वामी जी के उतारे के लिए सेन महाशय पहले देवेन्द्र नाथ जी ठाकुर के पास गए, परन्तु जब उन्होंने स्थान देने में संकोच प्रकट किया तो फिर उन्होंने श्रीयुत सुरेन्द्र मोहन को कहा। सुरेन्द्र मोहन स्थान देने में कुछ हिचके थे सही, परन्तु जब सेन महाशय स्वामी जी को रेलवे स्टेशन से उनके मकान पर ही ले आए तो सुरेन्द्र मोहन ने प्रसन्नता से स्वामी जी की आवभगत की और उनको अपने प्रमोद-कानन में उतारा।

स्वामी जी के पधारने का समाचार सारे नगर में फैल गया। अनेक जिज्ञासु जन सत्संग में जाने लगे। पण्डित हेमचन्द्र चक्रवर्ती एक बड़े पक्के ब्रह्मसमाजी थे। उन्होंने एक दिन स्वामी जी से पूछा कि आप जाति भेद स्वीकार करते हैं अथवा नहीं ? उत्तर में महाराज ने कहा कि मनुष्य जाति, पशु जाति और पक्षी जाति आदि भेद तो प्रसिद्ध ही हैं, परन्तु यदि आपका आशय चार वर्णों से है तो वर्ण जन्म से नहीं है, वे तो गुण-कर्म के भेद से हैं। स्वामी जी ने वर्णों के कर्मों की व्याख्या करके ऐसी रीति से समझाया कि वे अतीव सन्तुष्ट हो गए।

चक्रवर्ती महाशय के पुन: पूछने पर स्वामी जी ने कहा कि ईश्वर निराकार है। उसका लक्षण सच्चिदानन्द है। इसकी उपलब्धि चिरकाल तक योगाभ्यास करने से होती है। चक्रवर्ती महाशय ने स्वामी जी से योग साधना की विधि पूछी, इसके उत्तर में स्वामी जी ने उनको उपदेश दिया कि अभ्यासी को चाहिए की तीन घड़ी रात रहते उठ बैठे। उस समय मुंह-हाथ धोकर पद्मासन से बैठ जाएं और दत्तचित्त होकर गायत्री का ध्यान करें। स्वामी जी ने हेमचन्द्र जी को अष्टांग योग की विधि और गायत्री मन्त्र अर्थ सहित लिख दिया। आसन भी लगाकर बताया। उनके पूछने पर स्वामी जी ने अच्छी प्रकार सिद्ध कर दिखाया कि सांख्य के कर्त्ता कपिल भगवान् परम आस्तिक थे। जब कि अधिकतर लोग कपिल मुनि को नास्तिक मानते हैं।

उन दिनों श्रीयुत् केशव चन्द्र सेन यज्ञोपवीत धारण करने वाले ब्रह्म समाजियों की निन्दा किया करते थे। इसलिए हेमचन्द्र जी ने इस विषय में स्वामी जी से प्रश्न किया। स्वामी जी ने कहा कि शुभ गुणयुक्त मनुष्य को यज्ञोपवीत धारण करना उचित है। आप भी विद्वान हैं, ब्राह्मण वंशीय हैं, इसलिए यज्ञोपवीत अवश्य ही धारण कीजिए। चक्रवर्ती महाशय ने फिर जनेऊ पहन लिया और अन्य अनेक सज्जनों ने भी उनका अनुकरण करते हुए, दोबारा यज्ञोपवीत धारण कर लिए। पंडित हेमचन्द्र जी स्वामी जी के अनुयायी बन गए और उनसे उपनिषद् अध्ययन करने लगे। वे स्वामी जी के साथ रहकर चिरकाल तक पढ़ते रहे। कई मास के पश्चात् फर्रूखाबाद में उनका पाठ समाप्त हुआ।

जिस समय स्वामी जी कलकत्ता आए, उस समय श्री केशवचन्द्र सेन कलकत्ता नहीं थे। वे जब आए तो महाराज से मिलनार्थ प्रमोद कानन में गए और दर्शन करके देर तक वार्तालाप करते रहे। महाराज ने उनका नाम आदि कुछ भी न पूछा। केशवचन्द्र सेन ने वार्तालाप में स्वामी जी से कहा, ''क्या आप कभी केशवचन्द्र सेन से भी मिले हैं ?'' स्वामी जी ने उत्तर दिया, ''हां मिला हूं और आप ही केशवचन्द्र सेन हैं।'' सेन महाशय ने कहा, ''यह आपने कैसे जान लिया कि मैं ही केशवचन्द्र सेन हूं ?'' स्वामी जी ने उत्तर दिया, ''जैसी बात आपने की है ऐसी किसी दूसरे की नहीं हो सकती।'' स्वामी जी की ऊहा-शक्ति से वे अति प्रसन्न हुए और उसी समय से उनके हृदय में महाराज के प्रति प्रेम और आदर का भाव उत्पन्न हो गया।

एक दिन केशवचन्द्र सेन जी ने स्वामी जी से पूछा, ''इस समय हमारे सामने बाइबल, कुरान और वेद इन पुस्तकों के आधार पर तीन बड़े धर्म हैं। सभी अपने को सच्चा कहते हैं। हमें कैसे ज्ञात हो कि इनमें से वास्तव में कौन सा सच्चा है।''

स्वामी जी ने उत्तर में बाइबल और कुरान में दोष दिखाकर कहा ''पक्षपात और इतिहासादि दोषों से विवर्जित केवल वेद ही हैं। इसलिए वैदिक धर्म ही सच्चा धर्म है।''

स्वामी जी की युक्तियां सुन और उनकी अपरिचित प्रतिभा का परिचय पाकर केशवचन्द्र सेन ने कहा, ''दुख है कि वेदों का अद्वितीय विद्वान् अंग्रेज़ी नहीं जानता, अन्यथा इंग्लैंड जाते समय वह मेरा इच्छानुकूल साथी होता।'' स्वामी जी ने भी हंस कर कहा, ''शोक है कि ब्रह्म समाज का नेता संस्कृत नहीं जानता और लोगों को उस भाषा में उपदेश देता है, जिसे वे समझते ही नहीं।'' केशव चन्द्र सेन ने अंग्रेज़ी में एक ग्रन्थ बनाया था, उसके आरम्भ में उन्होंने एक ऐसा श्लोक रखा था जिससे ईश्वर के हाथ, पांव आदि सिद्ध होते थे। स्वामी जी ने केशव जी को कहा कि ईश्वर तो व्यापक है, उसके ऐसे वर्णन अच्छे नहीं हैं। उन्होंने स्वामी जी का कथन स्वीकार कर लिया।

एक दिन, केशवचन्द्र जी ने स्वामी जी को कहा कि आप संस्कृत में ही बातचीत करते हैं, जो लोग संस्कृत नहीं जानते उनको पण्डित लोग कुछ और ही समझा देते हैं। इसलिए आप देश की भाषा हिन्दी में व्याख्यान देने का यत्न करें। स्वामी जी ने उनकी सम्मति को मान लिया। केशवचन्द्र जी ने स्वामी जी से यह भी निवेदन किया कि अब आप सभा आदि में जाते हैं, इसलिए वस्त्र धारण कर लें तो अच्छा है। महाराज ने इस प्रस्ताव को भी अनुमोदित किया। केशवचन्द्र सेन की इन दोनों बातों को स्वामी जी ने सहर्ष मान लिया, इससे स्वामी जी के सरल व निराभिमानी स्वभाव का परिचय मिलता है।

केशव चन्द्र सेन प्रतिदिन सायं समय श्री सत्संग में सम्मिलित होते थे। उन्होंने एक बार स्वामी जी से पुनर्जन्म और अद्वैतवाद पर प्रश्नोत्तर किए, जिनका उन्हें सन्तोषजनक उत्तर मिल गया। स्वामी जी ने एक सभ्य व्यक्ति के पूछने पर कहा कि हवन, मूर्ति पूजा नहीं है किन्तु वायुमण्डल को शुद्ध बनाए रखने की रीति है। स्वामी जी ने एक समय यह भी कहा था कि धर्म में मत-मतान्तरों को प्रमाण मानना उपयुक्त नहीं। प्रमाण में वेदों से लेकर महाभारत तक के ही ग्रन्थों को लेना चाहिए। स्वामी जी की कीर्ति नगर में इतनी अधिक फैल गई थी कि स्वामी जी के निवास स्थान के आगे गाड़ियों का तांता लगा रहता था। सत्संग में सहस्त्रों मनुष्य आते थे। शत-शत मनुष्य प्रश्नोत्तर करके तृप्ति लाभ करते थे।

स्वामी जी ने कलकत्ता में तीन मास निवास किया। इस बीच उनके अनेकों व्याख्यान हुए जिनमें तीन व्याख्यान मुख्य हुए। वे इस प्रकार हैं-

1. पहला व्याख्यान केशवचन्द्र जी ने अपने निवास पर करवाया जो संस्कृत भाषा में हुआ। परन्तु स्वामी जी की कथन शैली इतनी सरल थी कि उनका कथन सर्व साधारण की समझ में आ गया। स्वामी जी के तर्क से, युक्तियों से, दृष्टांतों से और प्रमाणों से सभी श्रोताजन प्रसन्न हो गए। पश्चिमी ज्ञान से पारंगत लोग स्वामी जी के वैज्ञानिक बल को जानकर आश्चर्य करने लगे। उनको यह स्वप्न में भी विश्वास नहीं था कि पूर्वीय दर्शन का पण्डित उनको सन्तुष्ट कर सकता है। व्याख्यान की समाप्ति पर महाराज की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई और लोग एक अत्युत्तम प्रभाव लेकर घरों में गए।

2. दूसरा व्याख्यान स्वामी जी का उस समय हुआ जब कलकत्ता ब्रह्म समाज का वार्षिकोत्सव था। ब्रह्म लोग स्वामी जी से उपदेश देने की विनती करने लगे।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय.....

विजयदशमी (दशहरा)

13 अक्तूबर को विजयदशमी (दशहरा) का पर्व सारे देश में मनाया जा रहा है। प्रतिवर्ष यह पर्व आता है और इस पर्व पर रावण, मेघनाथ और कुम्भकरण के पुतले बनाकर जलाए जाते हैं और रामलीला करने वाले प्रत्येक व्यक्ति जो राम, लक्ष्मण और उनकी सेना की भूमिका निभा रहे होते हैं वे राम वेशधारी उन पुतलों के चारों ओर घूमते हैं, कुछ देर बाद रावण आदि के पुतलों को आग लगा दी जाती हैं। बड़े-बड़े धमाकों के साथ वह पुतले क्षण भर में जल कर नष्ट हो जाते हैं। चिर काल से ऐसा चला आ रहा है कि प्रतिवर्ष रावण को जलाया जाता है परन्तु रावण फिर पैदा हो जाता है। वर्ष भर रावण बढ़ता रहता है और दशहरे पर उसे जला दिया जाता है। लेकिन हजारों वर्ष बीत गये यही सिलसिला चला आ रहा है। रावण मरने में ही नहीं आता । क्या कभी इस रावण से पीछा छुड़ाया जा सकेगा? लगता है ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि उस युग में तो एक रावण था जिसे भगवान राम ने मार दिया था, परन्तु आज तो चारों ओर रावण ही रावण हैं। राम तो कहीं देखने को नहीं मिलता।

रावण मद्यपान करता था, मांस खाता था, निर्दयी हृदय और क्रूर था। परस्त्री का हरण करने वाला दुराचारी था। परन्तु आज समाज में रावण से भी बुरा बर्ताव करने वाले लोगों को आप क्या संज्ञा देंगे। रावण ने सीता का अपहरण तो किया था परन्तु उसके शील को भंग नहीं किया था। राक्षस होते हुए भी उसकी कुछ मर्यादायें थी, परन्तु आज के रावण की कोई मर्यादा नहीं है। प्रतिदिन कितनी ही महिलाओं का अपहरण हो रहा है, उनकी इज्जत लूटी जा रही है। कोई दिन ऐसा नहीं होता जिस दिन समाचार पत्रों में इन रावणों की करतूतें प्रकाशित नहीं होती। जो स्वयं रावण जैसे कार्य कर रहें हैं वे लोग ही विजयदशमी के दिन रावण को जलाने के लिए इकट्ठे हो जाएंगे।

प्रत्येक मानव के अन्दर राक्षसी और दैवी विचारधाराएं काम कर रहीं हैं। देश, जाति और समाज के शत्रुओं से अपने अन्दर के शत्रु अधिक खतरनाक होतें हैं, बाहर की विजय से अपने अन्दर की विजय का अधिक महत्व है। अपने मन पर विजय प्राप्त करना, अपने अन्तःकरण में बैठे गन्दें विचारों पर विजय प्राप्त करना है। यह प्रत्येक मानव के लिए आवश्यक है यही इस पर्व का सबसे बड़ा संदेश है। प्रत्येक मनुष्य के अन्दर जो रावण बैठा है उस रावण को मारना अति आवश्यक है और उसे तो प्रतिवर्ष ही नहीं बल्कि प्रतिदिन मारना चाहिए। अपने अन्दर के राक्षसी विचारों को कभी भी पनपने न दें। यही ऐसा रावण है जो बार-बार मरने पर भी पैदा हो जाता है और जिसे हर बार मारना अति आवश्यक है। अधर्म को न पनपनें दें नहीं तो वह धर्म पर हावी हो जाऐगा। राम अपने धर्म का पालन करने वाला था उसने अधर्मी रावण पर विजय प्राप्त कर ली। धर्म की सदा विजय होती है और अधर्म का नाश। आज सारे संसार में अधर्म बढ़ता चला जा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति अर्थ और अधिकार के पीछे पड़ा हुआ है और उसे पाने के लिए बड़े से बड़ा पाप करने में भी नहीं हिचकिचाता। अपने अर्थ और अधिकार के लिए अगर किसी की हानि हो जाए, किसी को दुःख पहुंचे, या किसी का कत्ल भी करना पड़े तो यह उसके लिए साधारण सी बात है।

क्या आर्य बन्धु विजयदशमी का पर्व मनाते हुए यह चिन्तन और मनन करेंगे कि इस पर्व को मनाने का क्या महत्व है। जहां इस दिन भगवान राम के गुणों का वर्णन किया जाए, वहां राम के चैरित्र को जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी जाए वहां अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का भी प्रयत्न करना चाहिए।

राम का जीवन एक आदर्श, श्रेष्ठ और आर्य जीवन था। वह पुत्र के रूप में, भाई के रूप में, पति के रूप में, एक योद्धा के रूप में, एक राजा के रूप में, एक श्रेष्ठ मित्र के रूप में संसार के सामने अपने महान् आदर्श छोड़ गए हैं। माता पिता की आज्ञा से वह हंसते-हंसते जंगल की खाक छानने के लिए चले गए और भाईयों के प्रति उनका अटूट स्नेह था। लक्ष्मण के मूर्छित हो जाने पर राम ने जो विलाप किया उसमें उनका भ्रातृ प्रेम प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है। आदर्श पति के रूप में जब उन्हें हम देखते हैं तो वह सीता जी की जी-जान से रक्षा करते हुए दिखाई पड़ते हैं। आदर्श मित्र के रूप में जब हम उन्हें देखते हैं तो वह अपने मित्र सुग्रीव और विभीषण दोनों मित्रों को किष्किन्धा और लंका का राजा बनाकर अपनी मित्रता को अच्छी तरह निभाते हैं। आदर्श राजा के रूप में जब हम उन्हें देखते हैं तो वे एक ऐसे राजा थे जिनके राज्य की आज तक राम राज्य के रूप में उपमा दी जाती है। वह रात्रि को घूम-घूम कर गुप्तचरों की भांति अपनी प्रजा के सुख-दुख को स्वयं देखा करते थे। वह सारी प्रजा के प्रिय थे। सभी उनके गुणों को गाते थे।

इसलिए आओ हम इस पर्व पर चिन्तन करें कि क्या हमने अपने अन्दर के आसुरी भावों को समाप्त कर दिया है। जब तक हम अपने अन्दर की बुराईयों को दूर नहीं कर लेते, हमारे अन्दर दूसरों के प्रति अच्छी भावनाएं नहीं आती तब तक हमें इस पर्व को मनाने का कोई लाभ नहीं है। भगवान राम के समय में तो एक रावण केवल लंका में पैदा हुआ था, परन्तु आज तो गली-गली में रावण बैठे हुए हैं जो इस देश में भ्रष्टाचार फैला रहे हैं, बलात्कार की घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ रहीं हैं। आज हमें इन सभी रावणों से देश को बचाना होगा जो इस देश को खोखला कर रहे हैं। केवल रावण, मेघनाथ और कुम्भकर्ण के पुतले जलाने से हमें इन रावणों से मुक्ति नहीं मिलेगी। आज हमारा यह कर्त्तव्य ही नहीं बल्कि परम कर्त्तव्य है कि हम अपने देश को भ्रष्टाचार और सब प्रकार की बुराईयों से मुक्त कराने के लिए एकजुट हो जाएं। भ्रष्टाचार फैलाने वाले स्वार्थी तत्वों को इस समाज से दूर रखें, उन्हें आगे न आने दें तभी हम अपने देश को राम राज्य बना सकते हैं और हम विजयदशमी के पर्व को सार्थक कर सकते हैं।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामंत्री

श्रद्धांजलि सभा

आर्य समाज, फेस-1 फोकल प्वाइंट लुधियाना में रविवार 29 सितम्बर 2013 को साप्ताहिक सत्संग में आर्य समाज लुधियाना ही नहीं पंजाब की आर्य समाज के स्तम्भ, कर्मठ और समर्पित आर्य समाजी, आर्य प्रतिनिधि के उप-प्रधान श्रद्धेय श्री आशानन्द जी आर्य के देहावसान पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। आर्य समाज के संरक्षक श्री बलदेव राज आर्य जी ने विस्तारपूर्वक उनके संस्मरणों को याद करते हुए बताया कि वह श्री आशानन्द जी के साथ विभिन्न स्थानों पर गए और वे लुधियाना में आर्य समाज का कार्य करने की प्रेरणा देते रहे।

आर्य समाज के महामन्त्री श्री महेन्द्र प्रताप आर्य जी ने बताया कि मैंने जब 1975 में आर्य समाज दाल बाजार में जाना प्रारम्भ किया उस समय श्री आशानन्द जी आर्य समाज के मन्त्री थे। उन्होंने आर्य समाज दाल बाजार के मन्त्री पद से लेकर ज़िला सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा में उप-प्रधान पद को सुशोभित किया। विभिन्न आर्य शिक्षण संस्थानों के वे प्रधान, मन्त्री और प्रबन्धक रहे। विभिन्न उत्सवों पर आर्यजनों को बस अथवा टैम्पू और रेलगाड़ी द्वारा ले जाने का सारा प्रबन्ध वे स्वयं ही करते थे। अन्त में श्री महेन्द्र प्रताप आर्य ने अपनी ओर से अपने सभी अधिकारियों और सदस्यों की ओर से स्वर्गीय श्री आशानन्द आर्य जी को भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और "आसा सिंह मस्ताना" की पंजाबी कविता गाकर सुनाई।

दो मिनट के मौन और गायत्री मन्त्र के उच्चारण के साथ सभा विसर्जित हुई।

मानवीय जीवन के उद्देश्य

-ले० डा० एच. कुमार कौल, डायरैक्टर गांधी आर्य सी. सै. स्कूल, बरनाला

आज का युग भौतिक वादी युग है, वैज्ञानिक युग है। यही कारण है, कि संसार में हर व्यक्ति सुख की खोज सैक्स, नशा, शक्ति आदि में करता है। इस विषय में स्वामी दयानन्द का सन्देश विशेष महत्व रखता है। जिसे कोई भी व्यक्ति अनदेखा नहीं कर सकता। वैदिक दर्शन के अनुसार जीवन का एक निश्चित उद्देश्य है। जिसे कि हर व्यक्ति प्राप्त करना चाहता है। आर्य समाज जीवन जीने के लिए निम्नलिखित चार उद्देश्यों में विश्वास रखता है।

(1) धर्म-सत्य और वास्तविक धर्म।

(2) अर्थ-उचित ढंग से धनोपार्जन और प्रयोग।

(3) काम-योग्य इच्छाओं को पूर्ण करना।

(4) मोक्ष-मुक्ति अथवा जीवन का अन्तिम उद्देश्य।

इन को समझने के लिए, इनकी हमारे जीवन में क्या उपयोगिता है। ये जानने के लिए इन पर विस्तार से चर्चा करना अनिवार्य है।

1. धर्म-ये जीवन का पहला और आवश्यक उद्देश्य है। संसार में धर्म की बहुत उपयोगिता है। धर्म का अर्थ है ज्ञान। धर्म की परिभाषा के अनुसार मनुष्य का स्वाभाविक गुण मानवता है। यही उसका धर्म है। इसके लिए उसे अच्छे कर्म करने चाहिए। मनुस्मृति में मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षण बताये हैं।

(1) धृति-कठिनाइयों से न घबराना।

(2) क्षमा-शक्ति होते हुए भी दूसरों को क्षमा करना।

(3) दम-मन को वश में करना।

(4) अस्तेय-चोरी न करना।

(5) शौच-शरीर, मन, बुद्धि को वश में करना।

(6) इन्द्रिय-निग्रह-इन्द्रियों को वश में रखना।

(7) धी-बुद्धिमान बनना।

(8) विद्या-ज्ञान ग्रहण करना।

(9) सत्य-सच बोलना।

(10) अक्रोध-क्रोध न करना।

उपर्युक्त दस लक्षणों का सम्बन्ध व्यक्ति और समाज दोनों के साथ है। ऋषियों ने धर्म की एक परिभाषा और दी है-"यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः सः धर्मः।" अर्थात् धर्म वह है जिसका आचरण करने से अपनी और सबकी उन्नति हो। वेदों पर आधारित, धर्म मानवता का संदेश देता है। धर्म वह जो मूल्यों पर आधारित है। ये समाज को अनुशासित, नैतिक और खुशहाल मानवीय जोवन जीने की भावना पैदा करता है। आर्य समाज ने धर्म की संकुचित परिभाषा नहीं दी है। वह तो धर्म को आदर्श ढंग से जीने की शैली के रूप में परिभाषित करता है। ये व्यक्ति की भावना को शुद्ध और पवित्र बनाने पर जोर देता है। इसके अतिरिक्त ये ईश्वर में विश्वास पर भी विशेष बल देता है।

(2) अर्थ-अर्थ अथवा धन प्राप्ति जीवन का दूसरा उद्देश्य है। परन्तु धर्म के मार्ग पर चलकर ही धनोपार्जन करना चाहिए। साथ ही साथ नैतिक मूल्यों का भी ह्रास नहीं होना चाहिए। ये भी कहा जाता है कि ज्ञान से बढ़ा कोई धन नहीं है। ज्ञान से तात्पर्य भौतिक ज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान से है। भौतिक ज्ञान हमारी बाहरी जीवन, हमारी आवश्यकताओं और क्रियाओं से सम्बन्धित है। जबकि आध्यात्मिक ज्ञान आत्मा, ईश्वर और आत्मिक जीवन से सम्बन्धित है। सांसारिक जीवन जीने के लिए भौतिक ज्ञान आवश्यक है। ये उपयुक्त ज्ञान द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। जबकि इसकी अपेक्षा आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। आध्यात्मिक ज्ञान आत्मज्ञान द्वारा ही, सम्भव है। इसको प्राप्त करने के लिए योग क्रियाओं के निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है। धन द्वारा ही हम अपनी प्रारम्भिक आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा और मकान की पूर्ति कर सकते हैं। जीवित रहने के लिए इन आवश्यकताओं की पूर्ति आवश्यक है। जो धन द्वारा ही सम्भव है।

ये कहा जाता है कि सन्तुष्टि सबसे बड़ा धन है जोकि, भौतिक धन से भिन्न है। इसका तात्पर्य है कि हमें अपनी आवश्यकताओं को बढ़ने से रोकना चाहिए। अपनी इच्छाओं को उतना ही बढ़ाना चाहिए जितनी कि जीवन जीने के लिए जरूरी है। ये मन की एक अवस्था है। हम अपनी इच्छाओं को जितना बढ़ाते जाते है, वह बढ़ती जाती है। संक्षेप में अर्थ अथवा भौतिक धन एक ज़रूरी आवश्यकता है। किन्तु धन को अपने जीवन का एकमात्र उद्देश्य नहीं बनाना चाहिए। अपनी लालची प्रवृत्ति का त्याग करना चाहिए हमें धन का दास बनकर नहीं, बल्कि धन को अपना दास बनाकर रखना चाहिए।

(3) काम-(इच्छाओं की पूर्ति) काम से भाव सैक्स सम्बन्धी तृप्ति से है। ये आकर्षण और आसक्ति से उत्पन्न होता है। इस संसार में शायद ही कोई ऐसा मनुष्य हो जो इच्छाओं से मुक्त हो। अनियंत्रित इच्छायें ही विनाश का कारण बनती है। गीता के अनुसार-काम, क्रोध और लोभ नरक के तीन द्वार हैं। जब हमारी काम भावना बढ़ जाती है तब हम और अधिक पाने की इच्छा करते हैं। जब हम अपनी सीमाओं को लांघ जाते है तो हमारी इच्छाएँ बढ़ती जाती हैं। हमारा लालच बढ़ता जाता है और हमारी इच्छाएँ जब पूरी नहीं होती तो हम निराशा और पतन की ओर अग्रसर होने लगते हैं।

(4) मोक्ष-ये मानवीय जीवन का अन्तिम उद्देश्य है। ये जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति का नाम है। दुःख और कष्ट जो मानव को हमेशा जकड़े रखते है उन्हीं से छुटकारे का नाम मोक्ष है। ये आनन्द की चरम सीमा है। मोक्ष जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य है। सामान्यतः व्यक्ति अपना जीवन भौतिक स्वर पर ही जीता है। मोक्ष जीवन का कठिनतम उद्देश्य है। अर्थ और कर्म, दोनों धर्म से संचालित होने चाहिए। परन्तु मोक्ष इनमें सबसे भिन्न है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए निःस्वार्थ क्रियायें, आध्यात्मिक ज्ञान, और त्याग आवश्यक है।

पृष्ठ 2 का शेष- महर्षि का.....

श्री देवेन्द्र नाथ ठाकुर ने अपना ज्येष्ठ पुत्र द्विजेन्द्र नाथ को स्वामी जी की सेवा में भेज महोत्सव में पधारने की प्रार्थना की। जिस समय स्वामी जी उत्सव मण्डल में पधारे तो ब्रह्म समाज के मुख्य सभासदों ने उनका भक्ति भाव से स्वागत किया। वहां स्वामी जी का एक प्रभावशाली उपदेश भी हुआ।

3. तीसरा व्याख्यान उनके ब्राह्मण गोर के स्कूल में हुआ। यह व्याख्यान साढ़े तीन बजे आरम्भ हुआ। स्वामी जी ने पहले जगतपिता परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना अति गम्भीर भाव से की। तत्पश्चात् वेदों के प्रमाणों और युक्तियों से ईश्वर की निराकारता और एकत्व सिद्ध किया। जन्म से वर्ण मानने में बहुत दोष दिखाएं। महाराज ने तीन घण्टों से अधिक समय तक भाषण किया। इस बीच ईश्वर चन्द्र विद्यासागर भी स्वामी जी के पास एक-दो बार आए।

तत्पश्चात् स्वामी जी एक वृन्दावन व्यक्ति के साथ हुगली चले गए। वहां से स्वामी जी वैशाख बदी 5 सम्वत् 1930 तदनुसार 1873 को प्रस्थान करके भागलपुर पधारे और वहां एक मास पर्यन्त नगरवासियों को अपने उपदेशों द्वारा कृतार्थ करते रहे। तत्पश्चात् स्वामी जी पटना, छपरा होते हुए मिर्जापुर पहुंचे।

यह लेख कलकत्ता वालों के लिए बड़ा उपयोगी है। इसी उद्देश्य से मैंने यह लेख लिखा है। कृपया इसका लाभ उठाएं।

वेदों से उपलब्ध वेदवाणी

-मृदुला अग्रवाल १६ सरल बोस रोड कलकत्ता

वह परमात्मा हमारे और सब व्यष्टि और समष्टि रूप जगत् के रोम-रोम में परिपूर्ण है। उस प्रकाशस्वरूप के गुणों को यथावत् जानकर हम लोग उस पर पूरी श्रद्धा से आत्मसमर्पण करें। वह हमारे शरीर और आत्मा को बल देकर सहाय और आनन्द देता है।

अपने प्रति अपराध करने वाले से प्रतिशोध लेने का प्रयास न करें। ईश्वर की इच्छा पर उसे छोड़ दें। वह शत्रु अवश्य ही अपने कर्मों से सन्तप्त होता रहेगा अथवा शत्रुता छोड़ देगा।

विद्वान् महात्मा लोग वेद द्वारा संसार की वृद्धि और स्थिति का कारण विचार कर सबको सत्य मार्ग का उपदेश करें जिससे मनुष्य ईश्वरकृत रक्षासाधन, ज्ञान, खान-पान आदि पदार्थों का [जो सबको सब जगह सुलभ है] यथावत् ज्ञान प्राप्त कर दुःखों से मुक्त होकर आनन्द भोगें।

जिस प्रकार सद्वैद्य निदानपूर्वक रोगी के जोड़-जोड़ में से रोग का नाश करता है, वैसे ही ज्ञानी पुरुष निदिध्यासन पूर्वक आत्मिक दोषों को मिटा कर प्रसन्नचित्त होता है।

जो महात्मा अपनी मानसिक और शारीरिक शक्ति से अज्ञान के कारण से दुःख में डूबे हुओं के उद्धार में समर्थ होते हैं, वह सर्वशक्तिमान सर्वकर्त्ता परमेश्वर उन परोपकारी जनों का सदा सहायक और आनन्ददायक होता है।

जो मिलकर भोजन करने वाले मनुष्य भिन्न-भिन्न देश, भिन्न जल वायु होने से भिन्न वर्ण होकर भी एक ईश्वर की आज्ञा-पालन में एकरूप तत्पर रहते हैं, परमेश्वर प्रसन्न होकर उन पुरुषार्थी महात्माओं को दुःख से छुड़ा कर सदा आनन्द देता है। शुद्ध वायु सब प्राणियों को शारीरिक और मानसिक सुख भी प्रदान करता है।

घर-घर में इन्द्र सूर्य, सूर्य की किरणों को मरुद्-वायुओं को द्युलोक, भूलोक को प्राणप्रद शुद्ध बनाने के लिये उद्भिद्-अन्न, फल जड़ी-बूटियों से यज्ञ होना चाहिये।

क्रोध भी एक अनोखा भाव है यह राक्षस भी है यह बिना विचार के है, और दुष्टों के दमन के लिये प्रयोग होने पर यही ईश्वरीय तेज बन जाता है।

जो मनुष्य अपने बाहिरी और भीतरी क्लेशों में हृदय संशोधक परमेश्वर का स्मरण रखते हैं वे दुःखों से पार होकर तेजस्वी होते हैं। अथवा जैसे सद्वैद्य संशोधक औषधि से बाहिरी और भीतरी रोग का प्रतिकार करता है, वैसे ही आचार्य विद्याप्रकाश से ब्रह्मचारी के अज्ञान का नाश करता है।

मनुष्य पापकर्म छोड़ने से सर्वहितकारी परमेश्वर के कोप से मुक्त होते हैं। परमात्मा सब प्राणियों को उपदेश करता है और सब की सत्य भक्ति को स्वीकार कर यथार्थ आनन्द देता है।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर के क्रोध से डर कर मनुष्य पाप न करे और सदा उसे प्रसन्न रखे। सर्वज्ञ परमेश्वर के महाक्रोध से भय मानकर मनुष्य पातकों से बचें और सबके साथ उपकार करके जीवन भर आनन्द भोगे।

परमेश्वर पुरुषार्थियों को सदा पुष्ट और आनन्दित करता है। मनुष्य को प्रयत्न करके अपनी श्रेष्ठता और प्रतिष्ठा बढ़ानी चाहिये।

मनुष्यों को उचित है कि सत्य संकल्पी, सत्संग, ऋषि महात्माओं के वैदिक उपदेश को वाणी से पठन-पाठन, श्रोत्र से श्रवण श्रावण, और मन से निदिध्यासन अर्थात् बारम्बार विचार करके ग्रहण करें और सब अनुग्रहशील महात्मा परमेश्वर के दिये हुए विज्ञान और धर्म का प्रचार करते रहें।

मनुष्य अविवेक के कारण मूढ़ होकर अपनी और संसार की हानि कर डालता है। वह पुरुष अपने प्रमाद पर पश्चाताप कर और पाप कर्म छोड़कर ईश्वर-आज्ञा का पालन करके आनन्द भोगे।

यथार्थ में जो परमात्मा की भक्ति की ओर झुकते हैं उन्हें क्रमशः संसारिक धनादि पदार्थों में वैराग्य भाव उत्पन्न होता जाता है, और वे उन धनादि पदार्थों का सत्पात्रों में दान करने के लिये प्रायः त्याग किया करते हैं और करना चाहिये। तथा तदनुकूल वाणी भी वैसी ही दानादि शब्दों का प्रयोग करती है और जितना धनादि का त्याग करती जाती है उतना ही परमात्मा का उपस्थान (सामीप्य) करती जाती है।

जो लोग पापमय जीवन व्यतीत करते हैं, परमात्मा उनकी वृद्धि कदापि नहीं करता। यद्यपि पापी पुरुष भी कहीं-कहीं फूलते-फलते हुए देखे जाते हैं तथापि उनका परिणाम अच्छा कदापि नहीं होता। अन्त में जिस ओर धर्म होता है उसी पक्ष की जय होती है। इस तात्पर्य से यह कथन किया है कि परमात्मा पापी पुरुष और उनका अनुमोदन करने वाले दोनों का नाश करता है।

ब्रह्मचारी लोग परमेश्वर का आह्वान करके निरन्तर अभ्यास और सत्कार से वेदाध्ययन करें जिससे प्रीतिपूर्वक आचार्य की पढ़ाई ब्रह्मविद्या उनके हृदय में स्थिर यथावत् उपयोगी होवे।

तृण से लेकर परमेश्वर पर्यन्त जो पदार्थ संसार की स्थिति के कारण हैं, उन सबका तत्त्वज्ञान वेदवाणी के स्वामी सर्वगुरु जगदीश्वर की कृपा से सब मनुष्य वेद द्वारा प्राप्त करें और उस अन्तर्यामी पर पूर्ण विश्वास करके पराक्रमी और परोपकारी होकर सदा आनन्द भोगें।

जैसे समुद्र की लहरें स्वभाव ही से चन्द्रमा की ओर उछलतीं हैं और जैसे महात्मा लोग स्वभाव ही से भजन की ओर जाते हैं, इसी प्रकार सौम्य स्वभाव वाले विद्वान्, ज्ञान, कर्म, उपासना बोधक वेदवाणी की ओर लगते हैं। वेदरूपी वाणी में इस प्रकार की आकर्षण शक्ति है जैसी कि पूर्णिमा के चन्द्रमा में आकर्षण शक्ति होती है। अर्थात् पूर्णिमा को चन्द्रमा के आह्लादक धर्म की ओर सब लोग प्रवाहित होते हैं, इसी प्रकार ओजस्विनी वेदवाक् अपनी ओर विमल दृष्टि वाले लोगों को खींचती है।

जो लोग शुद्ध अन्तः करण से परमात्मा की उपासना करते हैं, परमात्मा उनके अन्तःकरण में पवित्र ज्ञान प्रादुर्भूत करता है।

शास्त्रार्थों के रोचक व प्रेरक संस्करण

-इन्द्रजित देव चूना भट्ठियां, सिटी सैन्टर के निकट, यमुनानगर

महाराजा ने आर्य समाज स्थापित किया-

दिनांक 25 अक्तूबर, 1888 ई. को नरसिंह गढ़ (राजस्थान) में एक शास्त्रार्थ हुआ था। इसका विषय था-''गुरु मन्त्र एक है वा अनेक ? यदि अनेक हैं तो उनमें से सत्य कौन-सा है ?'' इस शास्त्रार्थ में आर्य समाज के व महर्षि के उद्देश्यों के प्रति पूर्णत: समर्पित व अनेकों शास्त्रार्थों में वैदिक दुन्दुभि बजाने वाले श्री ब्रह्मचारी स्वामी नित्यानन्द जी ने अद्भुत् विजय प्राप्त की थी। यह शास्त्रार्थ पौराणिक पण्डित श्री यमुनादास जी के साथ हुआ था।

शास्त्रार्थ नरसिंह गढ़ा धीश महाराजा प्रताप सिंह की इच्छा, प्रयत्न व मध्यस्थता में हुआ था। महाराजा स्वयं वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे परन्तु स्वामी जी से मिलकर उन पर वैदिक मान्यताओं का विशेष प्रभाव पड़ा। नित्य वार्तालाप करते-करते महाराजा जी के मन में उथल-पुथल हिन्दुओं में व्याप्त अनेक सम्प्रदायों की मान्यताओं को लेकर मची इस दुविधाजनक वैचारिक स्थिति में महाराजा जी ने खिलचीपुर निवासी विद्वान् पण्डित यमुनादास को बुलाया व स्वयं ही शास्त्रार्थ की व्याख्या कराई व स्वयं तैयार की गई आठ प्रश्नों की सूची उसमें रखी। वे प्रश्न इस प्रकार हैं-

1. गुरु मन्त्र एक है व अनेक हैं ? यदि अनेक हैं तो उनमें से सत्य कौन-सा है ?

2. ईश्वर क्या पदार्थ है और कहां रहता है ? साकार है तो चतुर्भुज व त्रिनेत्र वा वक्रतुण्डादि में से किस प्रकार का है ?

3. चार सम्प्रदाय दादूपन्थी, कबीर पन्थी आदि मतों में से कौन-सा सत्य है ?

4. ईश्वर के अवतार 10 व 24 हैं ? वेद में कितने अवतार लिखे हैं ?

5. हमें नित्य कौन से कर्म करने चाहिए ?

6. संसार का कर्त्ता कौन है ? उसने किस प्रकार संसार का निर्माण किया ?

7. मुक्ति क्या पदार्थ है ? कोई स्थान विशेष है या अन्य कुछ है ? किन कर्मों से वह प्राप्त होती है ?

8. ईश्वर-उपासना किस प्रकार करनी चाहिए ?

शास्त्रार्थ में प्रथम ही श्री पं. यमुनादास जी ने कहा कि हम प्रथम में महाराजा के प्रथम प्रश्न पर ही निर्णय देंगे तथा तत्पश्चात् शेष बातों पर शास्त्रार्थ करेंगे। यह शास्त्रार्थ तीन दिन तक चलता रहा। पंडित यमुनादास जी ने इन तीन दिनों में प्रथम प्रश्न पर ही उचित उत्तर नहीं दिया। ''ब्रह्म गायत्री मन्त्र'' का जप करने का उपदेश वे महाराजा को देते रहे। जब स्वामी जी ने पूछा कि आप महाराजा को तो ''ब्रह्म गायत्री मन्त्र'' का जप करने का उपदेश दे रहे हैं परन्तु आप व आपके सम्प्रदाय के अन्य लोग ''क्लीं कृष्णाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा'' इत्यादि वेद विरुद्ध गुरु मन्त्र का उपदेश क्यों करते हैं ? इस पर व कुछ अन्य प्रश्नों पर पंडित जी सन्तोषजनक व वेदानुकूल उत्तर न दे पाए। ''ब्रह्म गायत्री मन्त्र'' कौन सा है, इसे भी वे स्पष्ट नहीं कर पाएं।

आगामी 7 प्रश्नों को तो पंडित जी ने छुआ ही नहीं। स्वामी नित्यानन्द जी ने प्रत्येक प्रश्न पर व्याख्यानों द्वारा दरबार में उपस्थित सब जनों को सन्तुष्ट किया।

इस ऐतिहासिक शास्त्रार्थ का यह परिणाम निकला कि लगभग 500 क्षत्रियों (जागीरदारों व राजकर्मियों) सहित महाराजा जी ने बड़ी श्रद्धा व निष्ठापूर्वक तीन दिनों तक उपवास रखा व यज्ञोपरान्त उपनयन धारण किया तथा नरसिंह गढ़ में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना प्रजा के साथ बहुत धूमधाम से की। यह घटना श्रावणी, पूर्णिमा, सन् 1888 तदनुदार 164 पूर्व विक्रमी की है।

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में १३० वां ऋषि बलिदान समारोह

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है। जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है-महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३० वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ-६ नवम्बर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अंतिम दिन १० नवम्बर को होगी। यज्ञ के **ब्रह्मा डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री** होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी-प्रतिवर्ष की परंपरा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसंधान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से संपन्न होने वाली वेदगोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस गोष्ठी में देश के अनेक विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है-**वेद और सत्यार्थप्रकाश १२वाँ समुल्लास**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। ८-१० नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता-प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गतवर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। ८ नवम्बर को परीक्षा एवं ९ नवम्बर को पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१३ तक 'आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि-उद्यान, अजमेर' इस पते पर भेज दें।

सम्मान-प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान-समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

नवम्बर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती है, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो सबके साथ में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिसमें संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३० वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अंतर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएं। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

वेद मन्त्र

-ले० विद्या सागर शास्त्री, आदर्श नगर, 533/11 कैथल

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय।
आयुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिं यजमानं च वर्धय॥

अथर्ववेद 19।63।1

गीतिका मिलिन्द पाद छन्द

हो खड़े हे वेदरक्षक! वेद के विस्तार को।
नागरिक सब सज्जनों नित्य ही उपकार को॥
यज्ञ से सम्पन्न कर यजमान के संस्कार को।
यज्ञ का शुभ बोध भर दे राष्ट्र के उद्धार को॥
प्राण, पशु, कीर्ति प्रजा की नित्य जिससे प्राप्ति हो।
शान्ति के साम्राज्य सुख की ऋद्धि सब संप्राप्ति हो॥

गायत्री मन्त्र (कवितामय-सरलार्थ)

ओ३म् भूर्भुवः स्व : तत्सवितुर्वरेण्यं,
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

ऋग्वेद-3। सूक्त 63। मन्त्र 10

द्रुत विलम्बित छन्द

सकरक्षक! प्राण प्रियेश हे! दुःख विनाशक सौख्य स्वरूप हो।
अखिल सृष्टि विधायक ईश हे! वर वरेण्य विशुद्ध स्वरूप हो!
अमित शक्तिद दिव्य स्वरूप हे! जनक ध्यान सदा तुझ में रहे॥
शुभ सदा पथ की अनुसारिणी। सुमति ही परमेश हममें रहे॥
ओ३म् शन्नो देवी रभिष्टय, आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः॥

द्रुतविलम्बित छन्द

अमर सर्वप्रकाशक देव हे! सकल संसृति में सब ओर से।
परम व्यापक हो परमेश हे, शमद भूति भरो चहुं ओर से॥
सकल मंगल सौख्यद ईश हे, सतत पूरक हो शुभ आश के।
शरण में हम है वर दीजिए, सुखद वृष्टि चतुर्दिक कीजिए॥
जनक हे करुणा करके सदा, अमृत पुत्र प्रज्ञा हम में यथा॥
उदय हो शमदायक शान्ति का, यह कृपान्वित दृष्टि रखो तथा॥
ओं वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः। ओं चक्षुः चक्षुः।
ओं श्रोत्रं श्रोत्रम्। ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कन्ठः।
ओं शिरः। ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। ओं करतलकरपृष्ठे।

द्रुत विलम्बित छन्द

सब चराचर रक्षक देव हे! विमल शक्ति विभो! मुख में बसे।
दुरित दुर्वच की कटुभाषिणी-प्रभु! नहीं, मृदु ये रसना बने॥
अखिल जंगम प्राण प्रियेश हे! विमल ही मम प्राण बने रहे॥
अतुल शक्ति प्रभो इनमें बसें, भयद काल नहीं इनको हरे।
तुम अगोचर दर्शन शक्ति से, त्वमसि सर्वत लोचन दिव्य हे।
अमल शक्ति बसें मम नेत्र में, न शत वत्सर में यह क्षीण हो॥
श्रवण शक्ति अगोचर हो विभो! तदपि सर्वत श्रोत्र स्वशक्ति।
श्रवण शक्ति न हो मम कर्ण की शिथिल वत्सर में शत से कभी॥
विहित बन्धन में सब लोक की, जग कलेवर की शुभ नाभि हे।
मम कलेवर के नस चक्र में अचल बन्धन शक्ति बनी रहे॥
विमल चिन्तन हो वर वेद का, हृदय में वह शक्ति भरो विभो!
कलित कण्ठ करें श्रुति गान को, अमर शक्ति पुनीत भरो प्रभो॥
विमल वेदमता-अनुकूल ही, असत-सत्य विवेचन ज्ञान को।
परम दिव्य सुतर्कन शक्ति का, सतत मस्तक में मम वास हो॥
दुखित के नित रक्षण लगे, अतुल शक्ति भरो मम बाहु में।
विमल कर्म करें निज हस्त से, सुयशवान् बने बलवान हो॥

गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला के छात्रों ने कुश्ती मुकाबला जीता

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा जिला स्तरीय कुश्ती मुकाबले बरनाला में सम्पन्न हुए जिसमें गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला के विद्यार्थियों द्वारा विजयी अभियान जारी रखा। स्कूल के कुश्ती कोच श्री रामचन्द्र आर्य, श्री चरणजीत शर्मा ने यह जानकारी देते हुये बताया कि अंडर 19 वर्ष 50 किलो मुकाबले में जिला बरनाला में रामू शाह प्रथम, अंडर 19 वर्ष 60 किलो ग्राम भार मुकाबले में शाम शाह जिला बरनाला में प्रथम, अंडर 17 वर्ष 46 किलो भार मुकाबले में गोबिन्दा जिला बरनाला में प्रथम, अंडर 17 वर्ष 55 किलोभार मुकाबले में परमजीत सिंह तथा कृष्ण कुमार 50 किलो भार मुकाबले में जिला बरनाला में द्वितीय रहे। स्कूल प्रबन्धक कमेटी प्रधान श्री प्रेम कुमार बांसल, भारत भूषण मेनन, डा. सूर्य कान्त शोरी, अमृत लाल गुप्ता, भारत भूषण मोदी, संजीव शोरी ने स्कूल प्रिंसीपल राम कुमार सोबती व कोच को बधाई देते हुये विजयी विद्यार्थियों को सम्मानित किया। विद्यार्थी पंजाब स्तरीय मुकाबलों में भाग लेंगे।

-राम कुमार सोबती प्रिंसीपल

वैदिक साधना आश्रम गुरदासपुर में वेद सप्ताह

वैदिक साधनाश्रम गुरदासपुर में 23 सितम्बर से 29 सितम्बर 2013 तक वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न हुआ जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री के सारगर्भित उपदेश और भजनोपदेशक श्री अरुण कुमार जी वेदालंकार के समुधर भजन हुए। इस अवसर पर धर्म प्रेमी लोगों ने श्री विजय कुमार जी शास्त्री के वेदों पर आधारित उपदेश का लाभ उठाया। श्री अरुण कुमार जी के भजनों को भी लोगों ने बहुत पसन्द किया। यह कार्यक्रम पूरी तरह से सफल रहा।

दयानन्द मठ दीनानगर की हीरक जयंती

दयानन्द मठ दीनानगर जिला गुरदासपुर की हीरक जयंती समारोह 18, 19, 20 अक्तूबर 2013 को बड़ी धूमधाम से मनाई जा रही है। 1937 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को लौह पुरुष फील्ड मार्शल स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज ने दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना की थी। इस तरह इस मठ को स्थापित हुये 75 वर्ष होने जा रहे हैं। इसलिये सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि वह इस हीरक जयंती समारोह में बढ़ चढ़ कर भाग लें।

अथर्ववेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से दिनांक 12 सितम्बर से 22 सितम्बर, 2013 तक अथर्ववेद पारायण यज्ञ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा मुम्बई से पधारे आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री थे। वेदपाठी गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली के ब्रह्मचारी श्री वेदप्रकाश शास्त्री एवं वेंकटेश शास्त्री ने सुमधुर स्वर में वेद पाठ किया।

आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री ने यज्ञ अवसर पर अथर्ववेद का भावार्थ, प्रयोजन आदि बताते हुए कहा कि मन की कुटिलताओं से रहित होना ही अथर्व का मुख्य अर्थ है। हमारा मन निर्मल पवित्र हो तभी हम पवित्र परोपकार के कार्य कर आनन्द और सुखी रह सकते हैं। आपने दस दिनों तक यज्ञ के पश्चात् संध्याकालीन सत्रों में वेद, ईश्वर, जीव, प्रकृति, वेद, सत्यार्थ प्रकाश महिमा, राष्ट्र भाषा हिन्दी, पाखण्ड व अन्ध विश्वास, सच्चा श्राद्ध, मानव जीवन जीने की कला आदि सामयिक विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिए।

उद्घाटन एवं समापन समारोह के अवसर पर सत्यार्थप्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ० श्री अशोक आर्य का सान्निध्य प्राप्त हुआ वहीं समापन अवसर पर शिकागो लेण्ड अमेरिका में आर्य समाज के संस्थापक अध्यक्ष कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. सुखदेव सोनी मुख्य अतिथि थे। अमेरिका से पधारे श्री एवन सोनी, श्री हरीकृष्ण दुग्गल एवं श्रीमती बीना दुग्गल विशिष्ट अतिथि थे। इनके अतिरिक्त विभिन्न प्रवचन के सत्रों में अनेक समाज सेवी, धर्म प्रेमीजन लाभान्वित हुए। सन्यासी प्रवासानन्द जी व आर्यानन्द जी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। इन्द्र देव पीयूष के भजनों का लाभ इस अवसर पर प्राप्त हुआ। इस आयोजन के मुख्य संयोजक डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने अतिथियों का स्वागत किया। आर्य समाज के प्रधान भंवरलाल आर्य, डॉ. शारदा गुप्ता, कोषाध्यक्ष प्रेम नारायण जायसवाल, कृष्ण कुमार सोनी, मुकेश पाठक, संजय शांडिल्य, अनन्त देव शर्मा, रामदयाल आदि ने उपरणा एवं नारियल, शाल भेंट कर अतिथियों का सम्मान-स्वागत किया। मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने आभार ज्ञापित किया। समापन समारोह अवसर पर ऋषि लंगर का आयोजन हुआ जिसमें लगभग 400 धर्मप्रेमी, ऋषि भक्त सम्मिलित हुए।

-प्रचार मन्त्री

www.thearyasamaj.org

वेद वाणी

न तं विदाथ य इमा जजान, अन्यद् युष्माकं अन्तरं बभूव।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति।।

-ऋ० १०/८२/७; यजु:० १७/३१

विनय—हे मनुष्यो ? तुम उसे नहीं जानते जिसने कि ये सब भुवन बनाए हैं। यह कितने आश्चर्य की बात है ? तुम्हारा वह पिता है, पर तुम अपने पिता से जुदा (अन्यत्) हो गए हो, तुम्हारा उससे बहुत फर्क पड़ गया है। ओह ? कितना भारी अन्तर हो गया है ? मनुष्य का तो उसके प्रभु के साथ अन्तर नहीं होना चाहिए। वह प्रभु तो हम मनुष्यों की आत्मा की भी आत्मा है। उससे अधिक निकटतम वस्तु तो हमसे और कोई है ही नहीं, हो ही नहीं सकती। सचमुच वे परम-आत्मा हमारी आत्मा में भी व्यापक हैं। उनसे निकट हमारे और कोई नहीं है। फिर वे हमसे दूर क्यों हैं ? इसका कारण यह है कि हमारे और उनके बीच में प्रकृति का परदा आ गया है। हम दो प्रकार के परदों से ढके हुए हैं, जिससे कि वह इतना निकटस्थ भी हमसे इतना दूर हो गया है। एक प्रकार के (तमोगुण-बहुल) लोग तो "नीहार" अज्ञान से ढके हुए हैं जिसकी धुंध में इतने पास में भी उन्हें नहीं देख पाते; दूसरे (रजोगुण-बहुल) लोगों ने "जल्पि" से, विद्या के शब्दाडम्बर से, पढ़ी-लिखी मूर्खता से, निरर्थक जल्पना के परदे से अपने-आप को ढक लिया है। ये दोनों प्रकार के मनुष्य अपनी-अपनी दिशा में इतने दूर बढ़ते गए हैं कि प्रभु से दिनों-दिन दूर होते गए हैं। नीहारावृत लोग तो संसार में "असुतृप्" होकर विचर रहे हैं। वे खाते-पीते मौज करते हुए निरन्तर अपने प्राणों के तर्पण करने में ही लगे हुए हैं। कामनाओं-इच्छाओं का निवास मनुष्य के सूक्ष्म प्राण में ही है। ये ज्यों-ज्यों अपनी बढ़ जाती अनगिनत कामनाओं की तृप्ति में इन कामनाओं को पुष्ट करते जाते हैं, त्यों-त्यों ये प्रभु से दूर होते जाते हैं। इसी तरह दूसरे जल्पावृत लोग "उक्थशास्" होते हैं अर्थात् संसार में बड़े-बड़े शास्त्र पढ़कर, वाद-विवाद-वितण्डा में चतुर होकर, दूसरों को ज़ोरदार व्याख्यान देते फिरते हैं, पर अपने-आपको नहीं ।

-साभार वैदिक विनय, प्रस्तुति रणजीत आर्य

प्रह्लाद बांसल आर्य, आर्य समाज धूरी के अध्यक्ष निर्वाचित

आर्य समाज मंदिर धूरी का चुनाव दिनांक 29-10-2013 को आर्य समाज के सत्संग भवन में सायंकाल समय 2.30 पर अध्यक्ष पद के चुनाव हेतु हुई एक बैठक में प्रहलाद बांसल को नया अध्यक्ष चुना गया है।

बैठक में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सदस्य भारत भूषण मैनन ने बतौर चुनाव पर्यवेक्षक शिरकत की। वही उनके साथ राम कुमार सोबती प्रिंसीपल गांधी आर्य स्कूल बरनाला व तिलक राम मंत्री आर्य समाज बरनाला ने भी सहायक पर्यवेक्षक के तौर पर उपस्थिति दर्ज करवाई। चुनाव के उपरान्त भारत भूषण मैनन ने जानकारी देते हुए बताया कि आर्य समाज धूरी के अध्यक्ष पद के चुनाव में 2 उम्मीदवार मैदान में थे। उन्होंने बताया कि 47 सदस्यों में से 44 सदस्यों ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया था जिनमें से अध्यक्ष चुने गए प्रह्लाद बांसल को 28 मत तथा उनके प्रतिद्वन्द्वी उम्मीदवार डा० रामलाल गोयल को 15 मत हासिल हुए हैं। एक मत को रद्द किया गया है। उन्होंने 13 मतों के अन्तर से विजयी रहने के चलते प्रह्लाद आर्य को आर्य समाज धूरी का नया अध्यक्ष चुनने का ऐलान करते हुए बताया कि बाकी कार्यकारिणी चुनने के सभी अधिकार अध्यक्ष प्रहलाद आर्य को दिए गए हैं।

इस मौके पर इनके अलावा बरिन्द्र गर्ग प्रबन्धक आर्य स्कूल, धीरज दादाकर बरनाला को-आर्डीनेटर प्रदेश भाजपा, अमनदीप सिंह ग्रेवाल, जगरूप सिंह, सेवानिवृत प्रिंसीपल आर. पी. शर्मा, श्याम आर्य, बासदेव आर्य, सतीश आर्य, पवन कुमार गर्ग, रामपाल आर्य, एडवोकेट जसवीर रत्न, रमेश आर्य, कमल किशोर लवली, सोमप्रकाश आर्य, कर्मचन्द आर्य, अशोक गुप्ता, विकास जिंदल, अरुण गर्ग, अरबिन्द जिंदल तथा विकास शर्मा आदि भी मौजूद थे।

-पं. अमरेश शास्त्री

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ट
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।